**Department of Philosophy**
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR,
MADHUBANI (BIHAR)
(A Constituent unit of L. N. Mithila University K. Nagar, Darbhanga)
**Pper I, Indian Philosophy (BA Part- I, Honours)**

**By:- Dr. Kumar Sonu Shankar**
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
**Lacture No. 01, Nov.**
November 2, 2020

**BA Part- I, Honours**

# मीमांसा मत के अनुसार अनुमान की परिभाषा

मीमांसा सूत्र में अनुमान का कोई लक्षण नहीं दिया गया है किंतु, भाष्यकार शबरस्वामी ने अनुमान का लक्षण करते हुए लिखा है— *'ज्ञात संबंध (व्याप्ति संबंध) के संबंधी एकदेश दर्शन (लिङ्ग दर्शन) से एक देशांतर (साध्य विषय) का ज्ञान अनुमान है।

मीमांसा कुमारिल भट्ट ने 'ज्ञात संबंधस्य' पद के चार वैकल्पिक अर्थ प्रस्तुत किए हैं—

1. यह पद एक ऐसे ज्ञाता व्यक्ति को संदर्भित करता है, जो दो वस्तु यथा 'धूम्र और अग्नि के नियत और अव्यभिचारी संबंध' को जानता है।

2. यह पद एक ऐसे अधिष्ठान को संदर्भित करता है जहाँ इस संबंध यथा अग्नि और धूम्र के संबंध का ज्ञान होता है।

3. यह पद (अधिष्ठान के अतिरिक्त) संबंध मात्र यथा 'अग्नि और धूम्र के संबंध मात्र' को संदर्भित करता है।

4. यह पद लिङ्ग-लिङ्गि को एक तार्किक अविभाज्य अनु के रूप में (एकदेश) संदर्भित करता है, यथा 'अग्नि और धूम्र का एक तार्किक साकल्य के रूप में ज्ञान।'

पार्थसारथी मिश्र ने इन विकल्पों की व्याख्या करते हुए लिखा है कि प्रथम विकल्प स्वीकार करने पर अनुमान का अर्थ होगा कि जिस ज्ञाता के द्वारा संबंध ज्ञात है, उसकी बुद्धि (ज्ञान) ही अनुमान है। शब्दान्तर से जिस ज्ञाता को धूम्र और अग्नि का संबंध पहले से ज्ञात है यदि वही कालांतर में पर्वत पर धूम्र देखता है तो उसे व्याप्ति स्मरण द्वारा तत्काल पर्वत पर अग्नि का ज्ञान हो जाता है।

द्वितीय विकल्प के अनुसार महानस (पाकशाला) में धूम्र और अग्नि के नियत संबंध को जानकर पक्ष रूप पर्वत पर धूम्र दर्शन से जो अग्नि का बोध होता है वही अनुमान है।

**By:- Dr. Kumar Sonu Shankar**
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619


तृतीय विकल्प के अनुसार संबंध के एक संबंधी 'धूम्र' से अपर संबंधी अग्नि का जो ज्ञान होता है वही अनुमान है।

चतुर्थ विकल्प के अनुसार एकदेश अर्थात् समुदाय के ज्ञान से (लिङ्ग-ज्ञान अर्थात धूम्र दर्शन से) दूसरे समुदायी (साध्य रूप अग्नि) का जो ज्ञान होता है उसे अनुमान कहा जाता है।

पुनः शास्त्रदीपिका में पार्थसारथि मिश्र ने अनुमान का लक्षण बताते हुए कहा है कि "जिस तरह के पदार्थ का जिस प्रकार के पदार्थ के साथ साक्षात् अथवा परंपरासंबंध अर्थात् संयोग, समवाय, एकार्थसमवाय, कार्यकारणभाव अथवा अन्य कोई भी संबंध दृष्टांत—रूपधर्मी (सपक्ष) में जिस व्यक्ति को नियमित: ज्ञान है, उस पदार्थ का साध्य धर्मी (पक्ष) में, जिस व्यक्ति ने ज्ञान किया है, उसे ही इस प्रकार के संबंध के संबंधी में प्रबल प्रमाण द्वारा तादृप्य (तद्-वत्ता) और तद्-विपर्यय (तद्-वत्ताभाव) से अपरिछिन्न(रहित) वस्तु में जो ज्ञान होता है, उसे अनुमान कहते हैं, जैसे ऊर्ध्वगमनविशिष्ट धूम्र का अग्नि के साथ जिस पुरुष को नियत साहचर्य महानस आदि का ज्ञान है, उसी पुरुष को पर्वत में धूम्र दर्शन से जो ज्ञान होता है, वही अनुमान है।

प्रभाकर ने शबरभाष्य प्रदत्त 'अनुमान' की व्याख्या करते हुए कहा है कि अनुमान एकदेश दर्शन से अन्य एकदेश में होने वाले इंद्रियों से असंबद्ध ज्ञान है। प्रकरणपंचिका में शालिकनाथ ने अनुमान का लक्षण करते हुए कहा है— "अवगत संबंध नियम के द्वारा एकदेश के दर्शन से अन्य एकदेश रूप इंद्रियासंबंद्ध अर्थ में होने वाला अबाधित ज्ञान ही अनुमान है।